

## प्रकाश पर्व के प्रतीक गुरु रामदास

डॉ. साधना गुप्ता

सिख पंथ के प्रवर्तक गुरु नानक देव हैं जिन्होंने तत्कालीन समय (15वीं सदी) में समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर-जर होती रूढ़ियों और पाखंडों को दूर कर प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे की दृढ़ आधारशिला पर इस पंथ की स्थापना की। उन्होंने उदारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए सभी धर्मों की अच्छाइयों को इसमें समाहित कर सार-सार को गहि रहे का उदाहरण प्रस्तुत किया। 'ईश्वर एक है', इस मूलमंत्र को उपदेश के रूप में अपनाते हुए कहा। सभी को उसी ईश्वर ने बनाया है। सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं चाहे वह स्वयं को हिंदू कहे या मुसलमान। ईश्वर के लिए सभी समान ही हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ईश्वर सत्य है। मनुष्य को अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि उस परमात्मा के दरबार में लज्जित ना होना पड़े। उन्होंने यहाँ तक कहा कि परमात्मा उसी तरह व्यापक है जैसे सभी वनस्पतियों में आग समाई हुई है, एवं दूध में भी समाया हुआ है इसी तरह परमात्मा की ज्योति ऊँच-नीच सभी में व्याप्त है। परमात्मा घट घट में व्याप्त है।

सगल वनस्पति महि वसंतरु, सगल दूध महि घीआ।

ऊँच-नीच महि जोति समाणी, घरि-घटि माथड जीआ। (1)

क्रमशः सिख पंथ को बल प्रदान करने और मर्यादा सम्पन्न बनाने के लिए उन्होंने 'आदिग्रंथ' का संपादन किया, जिसमें 6 सिख गुरु नानक, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेगबहादुर को, 15 संतो क्रमशः शेख फरीद, जयदेव, त्रिलोचन, सधना, नामदेव, वेणी, रामानंद, कबीर, रविदास, पीपा, सेठा, धन्ना, भीखन, परमानंद और सूरदास तथा 15 रचनाकारों हरिबंस, बल्हा, मथुरा, गयंद, नल्ह, भल्ल, सल्ह भिक्खा, कीरत, भाई मरदाना, सुंदरदास, राइ बलवंड, सत्ता इम, कलसहार और जालप को स्थान देकर धर्म, जाति, क्षेत्र एवं भाषा की सीमाओं को अमान्य कर मानवता का संदेश दिया। इन्हीं में से यहाँ हमारे विवेचन का विषय गुरु रामदास है।

गुरु रामदास-गुरु रामदास (जेठा जी) का जन्म चूना मण्डी, लाहौर जो अब पाकिस्तान में है, में कार्तिक वदी 2. (25वाँ आसू) संवत् 1591 (24 सितम्बर, 1534) को हुआ था। इनकी माता दयाकौर जी (अनूपकौर जी) एवं बाबा हरीदास जी सोडी खत्री थे। इनका यह पुत्र बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक था। कहा जाता है कि रामदास जी का परिवार बहुत गरीब था। उन्हें उबले हुए चने बेच कर अपनी रोजी-रोटी कमानी पड़ती थी। जब वे मात्र 7 वर्ष के थे, उनके माता-पिता का देहावसान हो गया। तब उनकी नानी उन्हें अपने साथ बसकें गाँव ले आयी। उन्होंने बसकें में 5 वर्षों तक उबले हुए चने बंच कर अपना जीवनयापन किया। एक बार गुरु अमरदास साहिब जी, रामदास साहिब जी की नानी के साथ उनके दादा की मृत्यु पर बसकें आए और उन्हें रामदास साहिब से गहरा लगाव सा हो गया। रामदास जी अपनी नानी के साथ गोइन्दवाल आ गये एवं फिर वहीं बस गये। आजीविका का सवाल अपनी जगह था अतः यहाँ भी वे अपनी रोजी-रोटी के

लिए उबले चने बेचने लगे। परन्तु साथ ही साथ गुरु अमरदास साहिब जी द्वारा धार्मिक संगतों में भी भाग लेने लगे। उन्होंने गोइन्दवाल साहिब के निर्माण की सेवा की। बाद में इनका विवाह अमरदास जी की पुत्री बीबी भानी जी के साथ हुआ। पृथ्वीचन्द, महादेव और अरजन इनके तीन पुत्र हुए। गुरु अमरदास के प्रिय शिष्य होने के कारण ये उन्हीं के साथ रहने लगे एवं यात्राओं पर जाने लगे।

चतुर्थ नानक के रूप में स्थापित अपनी प्रतिभा, निष्ठा, सेवा और भक्ति से रामदास जी ने शीघ्र ही अमरदास जी के समक्ष स्वयं को गुरु बनने के योग्य सिद्ध कर दिया। परिणामस्वरूप 10 सितंबर 1574 को को उन्हें गुरु की उपाधि प्रदान करते हुए चतुर्थ नानक के रूप में स्थापित किया गया।

गुरु रामदास जी के कार्य-

रामसर (अमृतसर) का निर्माण उन दिनों जब विदेशी आक्रमणकारी एक शहर के बाद दूसरा शहर तबाह कर रहे थे, तब इन्हीं 'चौथे नानक' गुरु रामदास जी महाराज ने एक पवित्र शहर रामसर का निर्माण करवाया जो कि अब अमृतसर के नाम से जाना जाता है। इस उद्देश्य के लिए गुरु साहिब ने तुंग गिलवाली एवं गुमताला गाँवों के जमींदारों से संतोखसर सरोवर खुदवाने के लिए जमीनें खरीदी। बाद में उन्होंने संतोखसर, का काम बन्द कर अपना पूरा ध्यान अमृतसर सरोवर खुदवाने में ही लगा दिया। इस कार्य की देख रेख करने के लिए भाई सहलो जी एवं बाबा बूढा जी को नियुक्त किया गया।

जल्द ही यह नया शहर (चक रामदासपुर) अंतरराष्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बन चमकने लगा। यह शहर व्यापारिक दृष्टि से लाहौर की ही तरह महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। गुरु रामदास साहिब जी ने स्वयं विभिन्न व्यापारों से सम्बन्धित व्यापारियों को इस शहर में आमंत्रित किया। समय आने पर आपका यह कदम सामरिक दृष्टि से बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ। यहाँ सिक्खों के लिए भजन-बन्दगी का स्थान बनाया गया। इस प्रकार एक विलक्षण सिक्ख पंथ के लिए नवीन मार्ग तैयार हुआ।

स्वर्ण मंदिर का निर्माण गुरु हरमंदिर साहित्य यानी 'स्वर्ण मंदिर' की नींव भी इनके कार्यकाल में रखी गई। इन्होंने ही विशेष प्रयोजन से स्वर्ण मंदिर के चारों ओर की दिशा में द्वार बनवाए थे। वह प्रयोजन था कि यह मंदिर हर धर्म, जाति, लिंग के व्यक्ति के लिए खुला है और कोई भी यहाँ कभी भी किसी भी वक्त आ जा सकता है।

मसंद पद्धति का शुभारम्भ-गुरु रामदास साहिब जी ने मंजी पद्धति का संवर्द्धन करते हुए मसंद पद्धति का शुभारम्भ किया। यह कदम सिक्ख धर्म की प्रगति में एक मील का पत्थर साबित हुआ। "मसंद" एक फारसी शब्द है। जिसका अर्थ है "उच्च स्थान या स्थिति" क्योंकि गुरु साहिब द्वारा नियुक्त किए गए सेवकों और प्रेरकों की अन्य सिक्खों की तुलना में उच्च स्थिति थी। इसलिए उन्हें मसंद कहा जाता था। मसंद प्रणाली को शुरू करने के मुख्य कारणों में रामदासपुरा में अमृतसर और संतोखसर नाम के सरोवरों के निर्माण के लिए एवं लंगर प्रथा को चलाने के लिए धन की आवश्यकता के संग सुचारू रूप से दूर-दूर तक धर्म प्रचार करनी माना गया है।

विशेषताएँ-मसंद प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में गुरु साहिब मसंद (गुरु द्वारा नियुक्त प्रमुख) नियुक्त किए जाते थे जो गुरु साहिब के विशेष प्रतिनिधि के रूप में अपने इलाके में प्रचार करते थे और पैसा इकट्ठा करके गुरु साहिब को भेजते थे। यह पैसे वैसाखी के दिन अमृतसर में "गुरु गोलक" में जमा किये जाते थे और मसंदों को इसकी रसीद भी मिलती थी। दूर के स्थानों में जहाँ ये मसंद नहीं जा सकते थे, उनके प्रतिनिधि संगतों से धन इकट्ठा करते थे और उसे मसंदों के पास भेजते थे और वे इसे गुरु साहिब के पास जमा करते थे। गुरु साहिब ने सभी सिखों को यह कहा हुआ था कि वे अपनी आय का दसवाँ हिस्सा (दशवन्ध) धार्मिक उद्देश्यों के लिए दें। इसे जबरदस्ती नहीं लिया जाता था। सिख अपनी इच्छा से धन दान करते थे।

सिख धर्म के प्रारंभिक विकास में मसंद प्रथा का महत्वपूर्ण योगदान था। मसंद उच्च आचरण और त्याग का जीवन बिताते थे। उनके उपदेश से लोग बहुत प्रभावित होते थे। इसलिए यह संस्था सिख धर्म के प्रचार में बहुत मददगार साबित हुई। इनके माध्यम से इकट्ठे किए गए धन से अमृतसर, संतोखसर, तरनतारन, हरगोबिंदपुर, करतारपुर और अन्य स्थानों पर निर्माण कार्यो को पूरा करने में सफलता मिली। इस पैसे से लंगर का काम भी बहुत सफलतापूर्वक जारी रहा, लेकिन इस प्रथा का नुकसान भी हुआ। मुगल बादशाहों को गुरु साहिब का लोगों से कर वसूलना, एक राज्य के भीतर एक और राज्य स्थापित करना लगा। इसलिए यह गुरु अर्जुनदेव जी की शहादत का एक प्रमुख कारण भी बना। लेकिन यहाँ रेखांकित तथ्य यह है कि लोग यह धन (पैसे) अपनी इच्छा (खुशी) और धार्मिक भावना से दिया करते थे। यह लोगों से कर की तरह जबरदस्ती वसुला नहीं जाता था और दूसरा इस धन का उपयोग गुरु साहिब किसी राजनीतिक उद्देश्य या अपनी निजी आवश्यकता के लिए नहीं करते थे। बल्कि इसका उपयोग धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता था।

परन्तु गुरु अर्जुन देव जी के बाद मसंद प्रणाली में कई दोष आ गये। मसंदों के व्यवहार में गिरावट आ गई। अतः गुरु गोविंदसिंह जी ने मसंद प्रणाली में घर कर गयी बुराईयों को ध्यान में रखते हुए इस संगठन को खत्म कर दिया और इसकी जगह पर 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की।

'चार लावों' (फेरों) की रचना-गुरु रामदास साहिब जी ने सिख धर्म को 'आनन्द कारज' के लिए 'चार लावों' (फेरों) की रचना की और सरल विवाह की गुरुमत मर्यादा को समाज के सामने रखा। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी की धर्म प्रचार कमिटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'आनंद कारज' में कमिटी के वरिष्ठ सलाहकार कुलमोहन सिंह लिखते हैं कि सिख धर्म में विवाह की 'आनंद कारज' रस्म सिखों के तीसरे गुरु, गुरु अमरदास जी (1552) के समय से अब तक लावों के रूप में चलती आ रही है। सिख कौम इसका पूरी मर्यादा के साथ पालन कर रही है।

'लावां' चार शब्दों से जुड़कर बना है, जिसकी रचना गुरु अमरदास जी के दामाद और उत्तराधिकारी गुरु रामदास साहिब जी ने की।

वह लिखते हैं कि आनंद कारज केवल तभी माना जाएगा, जब यह गुरु ग्रंथ साहिब जी की उपस्थिति में होगा। आनंद कारज न तो कोई ठेका है और न ही किसी तरह का कोई समझौता। यह केवल एक धार्मिक रस्म है, जिसे गुरु साहिबानों ने पवित्र बताया है। सिख धर्म के अनुसार आनंद कारज दो आत्माओं का मिलाप है। यह मिलाप धरती पर नहीं बल्कि वाहेगुरु की ओर से स्वर्ग में बनाया जाता है। सिख धर्म में केवल आनंद कारज की मर्यादा के अनुसार हुए विवाह को ही प्रमाणित किया जाता है। गुरुद्वारे में फेरे शुरू होने से पहले गुरु ग्रंथ साहिब के पवित्र शब्द का पाठ किया जाता है.-

राग सुही महला पहला एक ओंकार सतगुरु प्रसाद।

हम घर साजन आए। साचे मेल मिलाए।

सहज मिलाए हर मन भाए पंच मिले सुख पाइआ।

साई वसत परापत होई जिस सेती मन लाइआ।

अनदिन मेल भइआ मन मानिआ घर मंदर सोहाए।

पंच सबद धुन अनहद वाजे हम घरि साजन आए।

अर्थात् वाहेगुरु सिर्फ एक है और वही माफ करने वाले हैं। मित्र मेरे घर आए हैं। सच्चे गुरु की कृपा ने मुझे उनकी संगत में मिला दिया है। आज मैंने वही वस्तु हासिल कर ली है। जिसके साथ मैंने मन जोड़ा था। इनके मेरे घर आने से पाँचों संगीत साजों का स्वयं ही सुरीला राग गूंजने लगता है।

'लोक पाँचवीं पातशाही के अनुसार, मैंने आज से किसी भी व्यक्ति की बुराई करना छोड़ दिया है। दूसरों की मदद करने का प्रण लिया है। मेरे स्वामी, मैंने सभी संबंधियों को झूठा ही देखा है इसलिए आपके साथ जुड़ रही हूँ। इन शब्द के बाद फेरे शुरू होते हैं।

पहला फेरा-

सूही चौथी पातशाही

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम दिडाइआ बलि राम जीउ। बाणी ब्रहमा वेद धरम दिइह पाप तजाइया बलि राम जीउ। धरम इगिइह हरि नाम धिआवहु समिति नाम दिडाइ। सतगुरु गुरु पूरा अराधह सभी किलविख पाप गवाइया। सहज आनंद होआ बडभागी मन हर हर मीठा लाइ जन कहै नानक लाव पहली आरंभ काज रचाइआ।

पहली लावाँ के अनुसार, स्वामी ने गृहस्थ के जीवन के फर्जा को जाना और उन्हें अपनाया है। इसके अनुसार, अपने दुख-दर्द मिटाने के लिए गुरु की बाणी का उच्चारण करो और अपने जीवन को सुखद बनाओ। सच्चाई को अपनाओ, यह कहा है।

नानक कहते हैं कि पहले फेरे द्वारा 'आनंद कारज' शुरू हो जाता है।

दूसरा फेरा-

हर दूजड़ी लाव सतगुरु पुरख मिलाइआ बलि राम जीउ। निरभउ भै मन होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ। निरमल भउ पाइआ हर गुण गाइआ हर वेखै राम हदूरे। हर आतम राम पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे। अंतर बाहर हर प्रभु एको मिल हर जन मंगल गाए। जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए।

दूसरे फेरे के अनुसार, मुझे सच्चे गुरु के साथ मिला दिया है। वाहेगुरु का नाम जपने और उनका यश गायन करने से वाहेगुरु मुझे हर जगह विद्यमान दिखते हैं। वाहेगुरु हर जगह विद्यमान है अतः परमात्मा की घट-घट में व्याप्ति को स्वीकार किया है।

नानक कहते हैं कि दूसरा फेरा खत्म हो गया है और ईश्वरीय कीर्तन गुंजता है।

तीसरा फेरा-

हर तीजड़ी लाव मन चाउ भइआ बैरागिआ बलि राम जीउ।

संत जना हर मेल हर पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ। निरमल हर पाइआ हर गुण गाइआ मुख बोली हर बाणी। संत जना वडभागी पाइआ हर कथीए अकथ कहाणी। -हिरदै हर हर हर धुन उपजी हर जपीए मसतक भागु जीउ। जन नानक बोले तीजी लावे हर उपजे मन बैराग जीउ। तीसरे फेरे में नानक कहते हैं कि इस फेरे से वाहेगुरु का प्रेम मेरे मन में उप्तन्न हो गया है। मन के अंदर स्वामी के प्यार की खुशी का जन्म हो गया है। यह परमात्मा के एहसास की स्वीकृति है।

नेक व्यक्तियों से मिलकर परम भाग्य द्वारा मैंने स्वामी और वाहेगुरु को प्राप्त कर लिया है। मैं गुरु ग्रंथ साहिब और लावाँ को ध्यान में रखते हुए इस पवित्र रिश्ते के साथ जुड़ रहा रही हूँ।

चौथा फेरा-

हर चउथड़ी लाव मन सहज भइआ हर पाइआ बलि राम जीउ। गुरुमुख मिलिआ सुभाइ हर मन तन मीठा लाइआ बलि राम जीउ। हर मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिन हर लिव लाई. मन चिंदआ फल पाइआ सुआमी हर नाम वजी वाधाई. हर प्रभ ठाकुर काज रचाइआ धन हिरदै नाम विगासी। जन नानक बोले चउथी लावै हर पाइआ प्रभ अवनासी। चौथे फेरे के अनुसार, गुरु रहमत के कारण बेहद आसानी से मैंने अपने स्वामी को प्राप्त कर लिया है, जो मेरी जिंदगी और देह को मीठा लगता है। मैं अपने स्वामी पर कुर्बान जाता हूँ। यह परमात्मा से मिलन की स्वीकृति है।

वाहेगुरु ने आनंद कारज पूर्ण कर दिया है। यहाँ से मैं मेरी नई जिंदगी की शुरुआत करता हूँ और वाहेगुरु की कृपा से उम्र भर इस पवित्र रिश्ते को निभाने का वादा करता हूँ।

फेरों के बाद अंतिम रस्म-

जब गुरु ग्रंथ साहिब को अंग-संग मानते हुए जोड़े के चार फेरे हो जाते हैं, तो इसके बाद श्री राग चऊथी पातशाही की आखिरी रस्म होती है, जिसका अर्थ होता है कि वाहेगुरु केवल एक हैं।

आज मेरा विवाह हो गया है। वह गुरु ग्रंथ साहिब जी के सामने प्रतिज्ञा लेते हुए उम्र भर एक साथ रहने, दूसरों की मदद करने और सदैव गुरु के चरणों से लगे रहने का वादा करते हैं।

इस आखिरी रस्म को पूर्ण करने के बाद जोड़ा शादी के बंधन में बंध जाता है और इसी के साथ 'आनंद कारज' संपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार उन्होंने सिक्ख पंथ के लिए एक विलक्षण वैवाहिक पद्धति दी जिसने समाज को रूढ़िवादी परंपराओं से दूर किया, साथ ही बाबा श्रीचंद जी के उदासी संतों व अन्य मतावलम्बियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किये।

रागों के ज्ञाता-उन्होंने 30 रागों में 638 शब्द (भजन) लिखे जिनमें 246 पौउड़ी, 138 श्लोक, 31 अष्टपदी और 8 वारां हैं और इन सब को गुरु ग्रन्थ साहिब जी में अंकित किया गया है। उनके गीतों में से लावन एक ऐसा गीत है जिसे सिख विवाह समारोह के दौरान गाया जाता है।

गुरु रामदास साहिब जी ने अपने गुरुओं द्वारा प्रदत्त लंगर प्रथा को आगे बढ़ाया। अन्धविश्वास, वर्ण व्यवस्था आदि कुरीतियों का पुरजोर विरोध किया। गुरु रामदास जी ने धार्मिक यात्रा के प्रचलन को बढ़ावा दिया। मधुर स्वभाव के व्यक्ति होने के कारण सम्राट अकबर भी उनका सम्मान करता था।

उन्होंने अपने सबसे छोटे पुत्र अरजन साहिब (अर्जुन) को पंचम 'नानक' के रूप में स्थापित किया। इसके पश्चात् वे अमृतसर छोड़कर गोइन्दवाल चले गये। भादों सुदी 3 (2 आसू) सम्वत् 1638 (1 सितम्बर 1581) को उनकी आत्मा ज्योति जोत में समा गई।

"सार रूप में रामदास जी ने जीवन में आस्था को माला के पुष्पों के मध्य विद्यमान धागे के समान समाहित कर दिया जिससे जीवन भोग का नहीं मानवता का प्रतीक बन सके, व्यक्ति में प्राणी मात्र के प्रति करुणा हो। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि गुरु रामदास एक महान गुरु थे, परमात्मा के सच्चे भक्त थे और इन सब से पूर्व एक सच्चे इंसान थे, जिनके जन्मदिवस पर प्रकाश पर्व या गुरुपर्व मनाया जाता है।

सन्दर्भ-

1. आदिग्रन्थ-अर्जुनदेव 617